Impact Factor (QJIF): 8.47 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 08/January/2026 **IJRAW:** 2026; 5(2):216-220 **Accepted:** 20/February/2026

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

[1]प्रमेश पाल और [*2]डॉ. हरीश चंद

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, आर०बी०एस० कॉलेज, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत।

[*2]एसोसिएट प्रोफेसर, आर०बी०एस० कॉलेज, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

इस शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना था। जिसके लिये शोधार्थी द्वारा जिला आगरा के तहसील फतेहाबाद के विद्यालयों को चुना गया। शोधार्थी द्वारा तहसील फतेहाबाद के सात माध्यमिक विद्यालयों को यादृच्छिक विधि द्वारा चुना गया। जिनमें शहरी व ग्रामीण छात्रों के सभी वर्गों में न्यादर्श के रूप में 100 छात्र और छात्राओं को चुना गया। शोधार्थी ने आंकड़ों के विश्लेषण के लिये सह–सम्बन्ध गुणांक परीक्षण का प्रयोग किया जिसके आधार पर पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

मुख्य शब्दः संवेगात्मक बुद्धिमत्ता, सृजनात्मकता, माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, सह–सम्बन्ध गुणांक, तहसील फतेहाबाद।

प्रस्तावना

शिक्षा जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त निरन्तर चलने वाली वह सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति की समस्त जन्मजात एवं अन्तर्निहित शक्तियों का सर्वोत्तम एवं सर्वांगीण विकास करके उसके व्यवहार का अधिकतम सम्भव परिमार्जन किया जाता है जिससे व्यक्ति अपना जीवन सुखपूर्ण ढंग से व्यतीत करने में समर्थ हो सके तथा समाज का एक सुयोग्य, उपयोगी तथा कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बन सके।

"शिक्षा मानव व्यवहार का परिमार्जन है।"

बालक की जन्म से ही शिक्षा प्रारम्भ कर दी जाती है। बालक की प्राथमिक शिक्षा उसके परिवार और प्रकृति से पूर्ण होती है। परिवार और प्रकृति को ही बालक का प्रथम विद्यालय और प्रथम शिक्षक कहा जाता है। बालक में अनेक प्रकार के. (उठना, बैठना, खेलना, हँसना, रोना, संवेगात्मक होना) आदि स्वभाविक गुण परिवार और प्रकृति के प्रभाव द्वारा ही समाहित होते हैं। जब बालक चार–पाँच वर्ष की उम्र की पडाव पर होता है, तब उसे औपचारिक रूप से विद्यालय की आवश्यकता होती है। जहाँ उसे प्राथमिक शिक्षा प्रदान की जाती है जो उसके सुयोग्य जीवन की नींव रखती है वहाँ से उसे समाज की एक नयी पहचान मिलती है।

प्राथमिक शिक्षा के उपरान्त उच्च प्राथमिक शिक्षा बालक के मस्तिष्क की अपेक्षाकृत अधिक विकसित करती है। इसके उपरान्त माध्यमिक शिक्षा प्रारम्भ की जाती है। यह शिक्षा 15–16 वर्ष की उम्र के विद्यार्थियों से प्रारम्भ की जाती है। इस उम्र में ही बालकों में सृजनात्मकता और संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का आगमन और विकास होता है। शिक्षा के माध्यम से ही बालक को संवेगात्मक बुद्धि द्वारा सृजनशील बनाने का प्रयास किया जाता है।

एक राष्ट्र अथवा समाज के लिये सबसे महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र उस समय ही उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है जबकि उसके अन्दर प्रत्येक मानव की यह सुविधा प्राप्त हो कि वह स्वतन्त्रतापूर्वक अपना उतना विकास कर सके जितना कि उसमें विकास करने की क्षमता है। प्रत्येक व्यक्ति में अन्तर्निहित शक्तियाँ होती है। जब इन शक्तियों को फलने–फूलने के अवसर मिलते हैं तो उसका

*Corresponding Author: डॉ. हरीश चंद

विकास उसकी क्षमता के अनुसार हो जाता है किन्तु यदि ऐसा नहीं होता तो उसका पूर्ण विकास नहीं हो पाता।
शिक्षा बालक की सर्वांगीण उन्नति का अत्युत्तम साधन है। उसके व्यक्तित्व के पूर्ण विकास का सोपान है। शिक्षा बालक में अन्तर्निहित शक्तियों को उभारकर उन्हें पूर्ण विकसित करती है। यह वह ज्ञान है जो बालक रूपी हीरे की क्रिश्टल रूपी बुराइयों को दूर कर, उसके आन्तरिक गुणों को जगमगा देता है जिसके प्रकाश में बालक स्वयं अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है और समाज को भी लाभ पहुँचाता है।

शिक्षा बालक के व्यवहार का परिष्कार करती है।

मनुष्य संवेगात्मक प्राणी है। प्रत्येक बालक संसार के सुखदायी एवं दुःखदायी संवेगों को लेकर जन्म लेता है जो क्रमशः उसको प्रसन्नता, सन्तुष्टि, दुःख एवं असंतुष्टि प्रदान करते हैं। जैसा कि पी०टी० यंग कहते हैं कि "संवेग उपद्रव की अवस्था है।"
अर्थात् सन्तुष्टि व असन्तुष्टि के मध्य का उपद्रव ही संवेग है। शिक्षा की दृष्टि से संवेग बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि ये जीवन में क्रियाशक्ति का संचार करते हैं। संवेग शरीर को क्रियारत होने के योग्य बनाते हैं। संवेगात्मक बुद्धि भावों को अनुभावों के द्वारा समावेशित करती है और भावनाओं से जुड़ी बातों को समझकर उनके बारे में सूचना प्राप्त कर उन्हें व्यवस्थित करती है। हम सभी को संवेगात्मक बुद्धि की आवश्यकता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पड़ती है।
प्रत्येक व्यक्ति अपनी संवेगात्मक बुद्धि के कारण अपने में सृजनशीलता का अद्भुत गुण उत्पन्न कर लेता है। बेरोन के अनुसार, ऐसे विचार जो अनुपम होते हैं, सम्भवतः सृजन के भावार्थ से अधिक ही होते हैं, वह न केवल सृजनात्मक कार्य के परिणाम होते हैं वरन् वह मानव जीवन के लिये नई दशायें सृजन कर देते हैं। रिलेटिविटी का सिद्धान्त एक ऐसा ही सृजनात्मक कार्य था, ऐसे ही चक्के का अविष्कार भी सृजनात्मक था। दोनों के ही कारण शक्ति के नये साधनों का विकास हुआ और मानव जीवन बहुत बदल गया। चक्के के अविष्कार का कारण है कि आज हम पृथ्वी पर इतनी तेज दौड़ने वाली गाड़िया पाते हैं और रिलेटिविटी के सिद्धान्त ने तो अणुशस्त्र, रॉकेट निर्माण इत्यादि सभी के विकास में योगदान दिया है। सृजनात्मकता मौलिक परिणामों की अभिव्यक्त करने की एक मानसिक प्रक्रिया है। विद्यार्थी ही देश का आगामी उज्जवल भविष्य है इसलिये माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी अपनी संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का अपनी सृजनात्मकता पर प्रभाविक परिचय देते हुए श्रेष्ठ विद्यार्थी बनने के लिये पूर्ण रूप से प्रयासरत रहते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की मुख्य उद्देश्य शैक्षिक जीवन में अग्रसर होना है।माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनशीलता पर अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। शिक्षा की वर्तमान में अधिक उपयोगिता होने के कारण माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थी अपनी संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और सृजनात्मकता को विकसित कर शैक्षिक जीवन में प्रयासरत् रहते हैं। वर्तमान समय को देखते हुये शिक्षा के द्वारा अवांछित संवेगों को नियन्त्रित करने तथा वांछित संवेगों को प्रोत्साहित करने के प्रयास किये जा रहे हैं। विद्यार्थियों के वातावरण को इस प्रकार नियन्त्रित किया जा रहा है कि एक ओर जहाँ अवांछित संवेगों का उदय न हो सके वही दूसरी ओर वांछित संवेगों का संचार हो सके। शोधन अध्ययवसाय तथा रेवन के द्वारा संवेगों को नियन्त्रित किया जा सकता है।
विद्यार्थियों में मौलिकता तथा विविधता की प्रवृत्ति को बढ़ाने के लिये अधिकाधिक प्रयास किये जा रहे हैं ताकि उन्हें अपनी सृजनात्मक अभिवृत्ति के लिये उपयुक्त अवसर तथा वातावरण उपलब्ध हो। इस प्रकार माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्त का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव के उद्देश्य से इस समस्या पर शोध कार्य की आवश्यकता अनुभव की गयी।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर

सार्थक प्रभाव पड़ता है।

5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

जर्गर (2003) ने अध्ययन के लिये बी०एड० के छात्रों का न्यादर्श लिया कि सृजनात्मकता में कम या उच्च मन स्थायी समूह का कोई सार्थक अन्तर नहीं है। उच्च शैक्षिक उपलब्धि के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं में उच्च श्रेणी की सृजनात्मकता देखने को मिलती है और निष्कर्ष निकाला कि सृजनात्मकता में कम या उच्च मन स्थायी समूह का कोई सार्थक अंतर नहीं है।

रैना (2004) ने अपना पी०एच०डी० शोध कार्य पूर्ण सेवा तथा सेवाकालीन अध्यापकों के व्यक्तित्व गुणों, मिश्रण अभिव्यक्ति तथा उनके सृजनशीलता गुणों का तत्व विश्लेषण विषय पर पूरा किया और निष्कर्ष निकाला कि छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं के बौद्धिक पर्यावरण संवेदनशील तथा वैद्यक्तिता में पाया कि कलात्मक क्षमता निम्न स्तर की होती है।

बौडनिक (2003) इन्होनें ऐसी नर्सों का अध्ययन किया जो कि व्यस्त अस्पताल में कार्यरत थी। 154 स्टाफ नर्स जो कि अलग–अलग क्लीनिक में कार्य कर रही थी। इनके संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया। विश्लेषण के फलस्वरूप यह निकाला कि व्यवसाय ने प्रतिवादी से अभिव्यक्तिकता तथा संवेगात्मक एम्सहाउसन के मध्य अर्थपूर्ण सम्बन्ध है।

ड्रेगो (2004) इन्होनें संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के माध्यम अपरम्परावादी महाविद्यालयों के मध्य सम्बन्ध पाया। जिसके लिये इन्होनें निम्नांकित परीक्षण किये MSCIT, STAI, AMP, WPT एवं स्टूडेण्ट डिमोग्रेफीक सर्वे प्रयोग किया तथा पाया कि छात्र का अंक उसके संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित है।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन की विषय वस्तु तथा प्रकृति को देखते हुए शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

न्यादर्श

न्यादर्श के रूप में शोधार्थी द्वारा माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 100 छात्रों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है जिसमें 50 शहरी छात्र, और 50 ग्रामीण छात्र है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में सृजनात्मकता के मापन के लिये डॉ० नरेन्द्र सिंह चौहान और डॉ० गोविन्द तिवारी द्वारा निर्मित रचना शक्ति परीक्षण तथा संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के मापन के लिये डॉ० एस० के० मंगल और मिसिज सुब्रह मंगल के मंगल इमोशनल इन्टेलीजेन्स इन्वेन्ट्री का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

शोधार्थी के द्वारा "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन" की समस्या के लिये आंकड़ों का संग्रह करने के लिये मुख्य तीन सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. सह–सम्बन्ध गुणांक

परिकल्पनाओं का परीक्षण एवं विश्लेषण

परिकल्पना–1 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तालिका 1: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभावों से सम्बन्धित सह–सम्बन्ध गुणांक सारांश

क्र०सं०	चर	चर स्तर	न्यादर्श(N)	ΣD^2	p
1	संवेगात्मक बुद्धिमत्ता	स्वतंत्र चर	50	172361.75	+0.11
2	सृजनात्मकता	परतंत्र चर	50		

उपरोक्त तालिका संख्या–1 से स्पष्ट है कि P का परिकलित मान 0.11 है अर्थात् 0.20 से कम है। अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर अत्यन्त निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।.

परिकल्पना–2 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तालिका 2: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बन्धित सह–सम्बन्ध गुणांक सारांश

क्र०सं०	चर	चर स्तर	न्यादर्श(N)	ΣD^2	p
1	संवेगात्मक बुद्धिमत्ता	स्वतंत्र चर	50	20053.92	+0.031
2	सृजनात्मकता	परतंत्र चर	50		

उपरोक्त तालिका संख्या–2 से स्पष्ट है कि P का परिकलित मान 0.031 है अर्थात् 0.00 से 0.20 के मध्य है। अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर अत्यन्त निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

परिकल्पना–3 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर

सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तालिका 3: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव सं सम्बन्धित सह–सम्बन्ध गुणांक सारांश

क्र०सं०	चर	चर स्तर	न्यादर्श (N)	ΣD^2	p
1	संवेगात्मक बुद्धिमत्ता	स्वतंत्र चर	25	3309.5	+0.030
2	सृजनात्मकता	परतंत्र चर	25		

उपरोक्त तालिका संख्या–3 से स्पष्ट है कि P का परिकलित मान 0.30 है अर्थात् 0.20 से 0.40 के मध्य में है। अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर अत्यन्त निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

परिकल्पना–4 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तालिका 4: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बन्धित सह–सम्बन्ध गुणांक सारांश

क्र०सं०	चर	चर स्तर	न्यादर्श (N)	ΣD^2	p
1	संवेगात्मक बुद्धिमत्ता	स्वतंत्र चर	25	29815	+0.55
2	सृजनात्मकता	परतंत्र चर	25		

उपरोक्त तालिका संख्या 5 से स्पष्ट है कि P का परिकलित मान 0.55 है अर्थात् 0.40 से 0.70 के मध्य है। अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता से परिमित धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

परिकल्पना–5 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तालिका 5: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बन्धित सह–सम्बन्ध गुणांक सारांश

क्र०सं०	चर	चर स्तर	न्यादर्श (N)	ΣD^2	p
1	संवेगात्मक बुद्धिमत्ता	स्वतंत्र चर	25	225.2	+0.35
2	सृजनात्मकता	परतंत्र चर	25		

उपरोक्त तालिका संख्या 5 से स्पष्ट है कि P का परिकलित मान 0.35 है अर्थात् 0.20 से 0.40 के मध्य में है। अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता से निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

परिकल्पना–6 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तालिका 6: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बन्धित सह–सम्बन्ध गुणांक सारांश

क्र०सं०	चर	चर स्तर	न्यादर्श (N)	ΣD^2	p
1	संवेगात्मक बुद्धिमत्ता	स्वतंत्र चर	25	2348.25	+0.29
2	सृजनात्मकता	परतंत्र चर	25		

उपरोक्त तालिका संख्या 6 से स्पष्ट है कि P का परिकलित मान 0.29 है अर्थात् 0.20 से 0.40 के मध्यम में है। अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता से निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

अध्ययन के निष्कर्ष

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पाया गया है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पाया गया है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता काउनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पाया गया है।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पाया गया है।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पाया गया है।
6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का उनकी सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पाया गया है।

शैक्षिक निहितार्थ

शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में हमें युवा पीढ़ी के लिए एक बेहतर पाठ्यक्रम का निर्माण करना है जो उनके संवेगों को एक नयी दिशा प्रदान कर सके।

वर्तमान समय में हमें इस पूर्व परम्परागत अवधारणा से बाहर निकलना होगा कि शहरी–विद्यार्थियों में ही शिक्षा के प्रति सचेतता पायी जाती है। वरन आज ग्रामीण अंचल में निवास करने वाले विद्यार्थियों में भी शिक्षा के प्रति उत्सुकता एवं जागरुकता देखने को मिली है अब शहर हो या गांव प्रत्येक बालक में अपने संवेगों का समुचित प्रयोग करके अपनी सृजनात्मक शक्ति का विकास कर देश का उत्तम, श्रेष्ट व सृजनशीलनागरिक बनने के लिए लालायित है।
ऐसी स्थिति को देखते हुए हमें तथा हमारे शिक्षाविदों को विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम का निर्माण करने के साथ उचित निर्देशन एवं परामर्श देने की महती आवश्यकता महसूस होनी चाहिए। ताकि वे अपनीसृजनात्मक शक्ति का सदुपयोग कर सके और भारतीय समाज को अपनी योग्यता की खुशबू से सरोवार हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राय, पी० एन० (2010–11) अनुसंधान परिचय लक्ष्मीनारायण, आगरा।
2. गुप्ता, एस० पी० एण्ड अल्का गुप्ता (2011) व्यवहारपरक मनोविज्ञान में सांख्यिकी विधियाँ शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3. शर्मा, आर० ए० (2011) शैक्षिक अनुसंधान आर०एन० डिपो, आगरा।
4. सिंह, कुमार अरूण (2011) मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
5. सिंह, लाल साहब (2005) मापन मूल्यांकन एवं सांख्यिकी साहित्य प्रकाशन, आगरा।
6. लाल एवं जोशी (2010–11) शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारम्भिक सांख्यिकी आर०लाल बुक डिपो, मेरठ।
7. पाठक, पी० डी०(2010) शिक्षा मनोविज्ञान श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
8. भटनागर (2004) शिक्षा मनोविज्ञान आर० लाल बुक डिपो, मेरठ।
9. गुप्ता एण्ड गुप्ता(2008) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
10. कुमार सन्त (2008) शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन अनपब्लिशड एम० फिल० (शिक्षा) डिजर्टेशन बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।
11. बौडनिक एम० एफ० (2005) इमोशनल इन्टेलीजेन्स एण्ड रिलेशनशिप विथ स्केलस सक्सेस डॉक्टरल डिजर्टेशन देवॉल यूनीवर्सिटी।
12. ड्रेगो, जूडी एम० (2004) द रिलेशनशिप विटवीन इमोशनल इन्टेलीजेन्स एण्ड एकेडमिक एचीवमेन्ट इन नान ट्रेडिमनल कालेज स्टूडेण्ट्स" डॉक्टरल डिजर्टेशन, वैल्डेन यूनिवर्सिटी।
13. नन्दा एण्ड पाल (2005) इमोशनल स्टेविलिटी सोनियो पर्सनल फैक्टर इण्डियन जनरल ऑफ साइकोमेट्री एण्ड एजूकेशन।
14. वर्मा, सुमन (2010) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक स्थिरता पर अभिभावकों के पैतृक प्रोत्साहन के प्रभाव का अध्ययन लघु शोध प्रबन्ध,बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।
15. अग्रवाल, सौरभ (2011)"झाँसी जनपद के माध्यमिक स्तर के संवेगात्मक बुद्धिका उनकी शिक्षण दक्षता पर प्रभाव" लघु शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।
16. भटनागर, ए० बी० (2011) शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली आर० लाल बुक डिपो, मेरठ।
17. गुप्ता, एस० पी० (2011) अनुसंधान संदर्भिका सम्प्रत्यय, कार्य विधि एवं प्रविधि" शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
18. सिंह, तेज प्रताप (2009) जनपद जालौन के बी०एड० के छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं में सृजनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन" उद्धृत लघु शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्डविश्वविद्यालय, झाँसी।
19. अहिरवार (2011) जनपद जालौन के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व के सन्दर्भ में वैज्ञानिक सृजनात्मकता का अध्ययन उद्धृत लघु शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।
20. सिंह, सुशील कुमार (2009) उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सृजनात्मकता का प्रभाव उधृत लघु शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।
21. भार्गव, महेश (2011) साइको लिंगवा, साइको लिंगुस्टिक एसोसियेशन ऑफ इण्डिया संजय नगर, आगरा।
22. गौतम, सुशील कुमार (2008) स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन उद्धृत, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।